B.A.-II/I[st] Paper (2010-2011)

प्रथम प्रश्न पत्र **संगीत शास्त्र** गायन एवं तबावादन M.M. 50

1. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का संपूर्ण ज्ञान।
2. प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक विद्वानों द्वारा श्रुति–स्वर विभाजन।
3. स्वरान्तराल (INTERVALS)
4. सांगीतिक स्वर सप्तक का विस्तृत अध्ययन। (MUSICAL SCALES)
5. पाश्चात्य पद्धति के पारिभाषिक शब्द – की सिगनेचर, बार लाइन्स, स्लर, टर्न, क्लैफ़ इत्यादि।
6. ग्राम / ग्राम–मूर्च्छना में अंतर।
7. मूर्च्छना।
8. नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर ग्रंथ का सामान्य अध्ययन।
9. संगीत से संबंधित सामान्य विषय पर संक्षिप्त निबन्ध।
10. निम्न विद्वानों का जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान – भरत मुनि, शारंग देव, विष्णु नारायण, भातखण्डे, ओंकारनाथ ठाकुर।

(कल्पना रस्तोगी)

प्रयोगात्मक

(स) केवल तबला व परखावजके लिए– पूर्णांक–100

तबला– परीक्षार्थीयों को निम्नलिखित तालों का अभ्यास करना चाहिए।

1. त्रिताल, झपताल, और रूपक (पेशकार, कायदा,गत टुकड़ा,रेला,परन, कमाल की परन,फरमायशी परनं के साथ।)
2. चौताल और तीव्रा–ठेका ओर परन, लयबॉट जैसा परखावजमे प्रयुक्त होता है।
3. कहरवा और दादरा की लग्गी बांट और प्रकार।

परखावज :– परीक्षार्थियों को निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में ठेका परन, तथा लयवाँट सीखना चाहिए।

तबला परखावज लेने वाले परीक्षार्थियो के इन बाद्यों को अकेले संगत , मे बजाने की क्षमता होनी चाहिए, उनमें अपने वाद्य पर बजाये जाने वाले बोलों को हाथ से लय (सम,खाली आदि) का ध्यान रखते हुए कहने की योग्यता आवश्यक है, उन्हे वाद्य मिलना भी आना चाहिए।

(कल्पना रस्तोगी)

B.A.-II/II[nd] Paper

द्वितीय प्रश्न-पत्र **राग, शैली तथा ताल का अध्ययन** M.M. 50

(गायन एवं तबलावादन)

1. राग लक्षण
2. निबद्ध गान–अनिबद्धगान
3. रागालाप, रूपकालाप, आलाप,अल्पत्व–बहुत्व, तिरोभाव–अविर्भाव, आलाप का स्वस्थान का नियम, आधुनिक आलाप, प्रबन्ध, ख्याल टप्पा, ठुमरी,ध्रुपद धमार, तराना, त्रिवट, चतुरंग आदि का ज्ञान।
4. निम्न रागो का विस्तृत ज्ञान, परस्पर रागों की तुलना राग पहचान, स्वरलिपि का लिखित ज्ञान, स्वरों के आधार पर पूर्वाग उत्तरांग द्वारा अंतर ज्ञान इत्यादि–

   विस्तृत राग– राग मियांमल्हार , राग दरबारी कान्हडा, राग मुल्तानी, राग शुद्ध कल्याण।

   गौण राग– राग अड़ाना, राग गौड़मल्हार, राग तोड़ी राग बसन्त, राग परज, राग पूरिया–धनाश्री
5. उक्त सभी रागों की स्वरलिपि लिखने की क्षमता के अतिरिक्त एक ध्रुपद , एक धमार, एक तराना की स्वरलिपि लयकारियो साहित ।
6. निम्न तालो का पूर्ण ज्ञान (लिखित मौखिक) लयकारी साहित– कहरवा, दीपचंदी,सूलताल, तीवरा, रूपक, झूमरा, तिलवाड़ा, आड़ा चार ताल।

(कल्पना रस्तोगी)

B.A.-II

संगीत गायन–क्रियात्मक

M.M. 100

1. परीक्षार्थी को निम्न लिखित रागों मे से प्रत्येक मे एक – एक द्रुत ख्याल सीखना आवश्यक है । पूरिया धनाश्री, बसन्त, परज, तोड़ी अड़ाना, गौडमल्हार। विद्यार्थियों को निम्न लिखित रागों मे से प्रत्येक में एक विलम्बित एवं एक द्रुत ख्याल सीखना आवश्यक है। राग शुद्ध कल्याण, राग दरबारी कान्हड़ा, राग मियाँमल्हार, राग मुल्तानी।

   इसके अतिरिक्त उक्त रागों मे से किसी एक राग में ध्रुपद, धमार लयकारी सहित एवं एक तराना भी सीखना आवश्यक हैं।

   उक्त रागों मे किसी एक राग मे भजन भी सीखना होगा।
2. निम्न लिखित तालों की पूर्ण जानकारी एवं हाथ पर ताल का ठेका, लयकारी सहित लगाने का ज्ञान।

   कहरवा, दीपचन्दी, तीलताल, सूलताल, तीवरा, रूपक, झूमरा, ताल।

(कल्पना रस्तोगी)

B.A.-II/IstPaper

(2010-2011) M.M. 50

अवनद्ध वाद्य (तबलातथा पखावज)

1. ताल रचना एवं उनके सिद्धान्त ।
2. तबला तथा पखावज बाजों के विभिन्न घराने का तुलनात्मक अध्ययन।
3. हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक ताल पद्धतियों में अन्तर।
4. भारतीय लयप्रधानवाद्यो तबला, पखावज, ढोलक खोल, मार्दल, नगाड़ा आदि का वर्णन, प्रयोजन एवं उपयोग।
5. संगीत से संबन्धित विषय पर संक्षिप्त निबन्ध।

IInd Paper

तालों का अध्ययन M.M. 50

1. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या–लग्गी, लड़ी, बाँट, रेला, गत, तिपल्ली,चौपल्ली,कमाली परन, फरमायशी परन, स्वर, प्रस्तार, साथ संगत।
2. क्रियात्मक पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों तथा लयकारियों को ताल लिपि मे लिखना।
3. गत तथा परन की रचना(साथ–संगत बाज से स्वतन्त्र)
4. (अ) संगीत गायन (ब) संगीत वादन (मृत्यु में तबला तथा पखावज संगत)
5. बोल समूहों से तालों की पहचानने की क्षमता।
6. समान मात्रा की तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. दिये गये बोल समूहों से कायदा पेशकार, परन, टुकड़ा आदि की रचना।
8. निम्नलिखित संगीतकारों का जीवन परिचय तथा उनका योगदान :– मसीतखाँ, पं0 कण्ठे महाराज, हबीबुद्दीन अहमदजान थिरकवा, रामकृष्ण, लक्ष्मण पर्वतकार।

प्रयोगात्मक M.M. 100

1. ब्रह्मताल का ठेका और साधारण परन।
2. दीपचन्दी तथा कहरवा ताल में लग्गी, बांट और प्रकार।
3. एकताल, आड़ा चौताल, सवारी और रूद्र, पेशकार सहित, पाँच कायदा, विभिन्न शैलियों के पल्टा सहित चारमुखड़ा, दो रेला और पाँच परन।
4. सूलताल, धमार, विभिन्न शैलियों में पाँच परन, लय, बाँट, पाँच टुकड़ा पाँच तिहाई के साथ।
5. परीक्षार्थियों में इन ठेकों की अत्यन्त धीमी गति से बजाने की क्षमता होनी चाहिए।
6. निम्नलिखित तालों में विभिन्न लयकारी तथा साधारण परन के साथ ठेका लक्ष्मी, गणेश, विष्णु, फरोदस्त।
7. परीक्षार्थियों में संगत करने की क्षमता होनी चाहिए। परीक्षार्थियों को लहरा या नग़मा बजाने का अभ्यास होना चाहिए।

(अल्पना एस० शर्मा)

पखावज —

~~तबला~~

तबला के समान

जो परीक्षार्थी तबला व पखावज लेते हैं उन्हें स्वतन्त्र (सोलो) तथा संगति दोनों बजाना होगा। अपने वाद्य पर बजाये जाने बोलो को हाथ से ताली देते हुए (सम, खाली आदि) बोलकर दिखाना होगा। उन्हें अपने वाद्य को मिलाने का भी ज्ञान होना चाहिए।

(अल्पना एस० शर्मा)